56

यीशु की भविष्यवाणी और चेलों के प्रश्न

(24:1-3)

मत्ती 23 में यीशु को शास्त्रियों और फरीसियों पर उनके कपट और उसे ठुकराने के कारण सात हायों की शृंखला की सार्वजनिक घोषणा करते दिखाया गया है। उस अध्याय के अन्त के पास, उसने कहा कि ''मैं तुम से सच कहता हूं, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी'' (23:36) और यह कि ''देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है'' (23:38)। इन भविष्यवाणियों में अध्याय 24 और 25 में प्रभु के निजी संदेश के लिए मार्ग तैयार किया गया, जहां उसने अपने द्वितीय आगमन और समय के अन्त के साथ-साथ यरूशलेम के विनाश को विस्तार से बताया। इन अध्यायों में मसीह की शिक्षा को आम तौर पर ''जैतून का उपदेश'' कहा जाता है, क्योंकि यह जैतून के पहाड़ पर दिया गया था। यह संदेश जो वास्तव में चेलों के प्रश्नों का उत्तर है, नये नियम में किसी प्रश्न का यीशु द्वारा दिया गया सबसे लम्बा उत्तर है।

यह अध्याय अपनी व्याख्या की चुनौती पेश करता है। एक कठिनाई यह है कि यीशु ने हर प्रश्न का उत्तर अलग से नहीं दिया; उसने यरूशलेम के विनाश से अपने द्वितीय आगमन और युग के अन्त की बात करते विषय को बदल दिया। यह तथ्य इस अध्याय की रूपरेखा बनाना और इसे समझना और कठिन बना देता है। एक और चुनौती है कि उसके संदेश में अपोकलिप्टिक भाषा और दृष्टांत दोनों हैं। इसलिए पाठक को प्रतीकात्मक और उदाहरण में से वास्तविक को अलग करना पड़ेगा। इसके अलावा अध्याय में भविष्यवाणी की झलक मिलती है। यरूशलेम का विनाश बेशक 70 ई. में हो गया और मसीह का दूसरा आगमन अभी हुआ नहीं था (लगभग 2,000 साल बाद), इसलिए यीशु ने उनके साथ ऐसे बात की, जैसे यह बहुत जल्द होने वाली हो (24:29)। भविष्यवाणी की झलक को आम तौर पर दूर से दो पहाड़ों को देखने से मिलाया जाता है, जिसमें वे लगते तो पास-पास हैं पर वास्तव में एक-दूसरे से मीलों दूर होते हैं।

इस अध्याय का आरम्भ मन्दिर के विनाश की यीशु की भविष्यवाणी (24:1, 2) के बाद उस घटना और द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में चेलों के प्रश्न के साथ होता है (24:3)। शेष अध्याय (24:4-51) में उनके प्रश्नों के प्रभु के उत्तर का भाग है।

यरूशलेम के विनाश की उसकी भविष्यवाणी (24:1, 2)

[1]जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उस को मन्दिर की रचना दिखाने के लिए उसके पास आए। [2]उसने उनसे कहा, तुम यह सब देख रहे हो न! मैं तुम से सच कहता हूं, यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।

आयत 1. 21:23 से आगे **यीशु मन्दिर** के प्रांगण में उपदेश दे रहा था। इन घटनाओं के बाद वह अपनी मृत्यु से पहले अन्तिम बार मन्दिर से गया। **चेले** मन्दिर से मोहित थे और उस समय के अधिकतर यहूदियों की तरह उन्हें भी लगता होगा कि यह कभी नष्ट नहीं होगा।[1]

यीशु के समय का मन्दिर वास्तव में मोरिया पहाड़ पर उसी जगह बनने वाला तीसरा मन्दिर था। यह जगह एक समय में यबूसी नगर हुआ करता था। इसी जगह पर अब्राहम की मुलाकात ''शालेम के राजा'' और ''परमप्रधान परमेश्वर के याजक'' मलिकिसिदक से हुई थी (उत्पत्ति 14:18-20; इब्रानियों 7:1) और इसी जगह माना जाता है कि अब्राहम ने इसहाक की बलि दी थी (उत्पत्ति 22:2)। इसी नगर में बहुत साल बाद, दाऊद ने अरौना यबूसी से खलिहान खरीदा था, ताकि वह वहां पर वेदी बना सके (2 शमूएल 24:16-25)।

दाऊद को परमेश्वर के लिए पक्का घर बनाने की उम्मीद थी, परन्तु परमेश्वर ने उसे ऐसा करने से रोक दिया (2 शमूएल 7:1-14; 1 राजाओं 5:3)। दाऊद ने चाहे निर्माण के लिए सामग्री, पैसा और कर्मचारी जुटाए (1 इतिहास 22:2-16), परन्तु पहला मन्दिर सुलैमान के निर्देशन और निरीक्षण में बना था (1 राजाओं 6-8) और इसी कारण इसे सुलैमान का मन्दिर कहा जाता था । इस मन्दिर का निर्माण कार्य 966 ई.पू. में शुरू हुआ और 959 ई.पू. में पूरा हुआ। मुख्य ढांचा चाहे इन सात सालों में बन गया था पर सुलेमान तेरह और सालों तक निर्माण के और भागों में लगा रहा, इसमें महल और अन्य शाही इमारतें बनवाते हुए जो मन्दिर के प्रांगण का हिस्सा बन गईं। इससे एक भव्य ढांचा बन गया, जो ''प्राचीन जगत के अजूबों में से एक'' के जैसा था। 586 ई.पू. में नबूकदनेस्सर द्वारा मन्दिर को जला दिया गया था (2 राजाओं 25:9)।

बाबुल की दासता के बाद फारस के राजा कुस्त्रु महान ने विस्थापित लोगों को अपने-अपने देश लौटने की अनुमति दे दी। पचास हज़ार के लगभग यहूदी 537 ई.पू. में यहूदा और यरूशलेम में लौट आए (एज्रा 2:64, 65)। जरूबाबिल के नेतृत्व में लोगों ने पुरानी जगह पर मन्दिर का निर्माण फिर से आरम्भ कर दिया। वेदी और मन्दिर की नींव रखने के बाद, काम लगभग बीस साल तक बंद रहा। इसे फिर से हाग्गै और जकर्याह नबियों की ताड़ना के कारण आरम्भ किया गया (एज्रा 5:1; 6:14; जकर्याह 1:1)। ''दूसरा मन्दिर,'' जिसे ''बहाल किया गया मन्दिर'' और ''जरूबाबिल का मन्दिर'' भी कहा जाता था, 516 ई.पू. में पूरा हुआ। सुलैमान के मन्दिर से इसमें कमी होने के बावजूद यह लगभग पांच सौ साल तक रहा, जोकि सुलैमान के मन्दिर से एक सदी से भी अधिक था और इसके अपने उत्तराधिकारी से अधिक देर तक था। इस मन्दिर को ''संसार भर में प्रसिद्ध'' के रूप में वर्णित किया जाता है।[2]

वह मन्दिर जिसकी बात यीशु ने 24:1 में की, ''तीसरा मन्दिर'' था, जिसे हेरोदेस महान के आदेश से बनवाया गया था। हेरोदेस द्वारा पुनर्निर्माण का कार्य 19 ई.पू. में आरम्भ हुआ था।[3] भीतरी मन्दिर का काम 1 ½ वर्ष में पूरा हुआ और खम्भे और बाहरी अहाता बनने में और आठ साल लग गए।[4] तौभी मन्दिर के प्रांगण का कार्य यीशु के समय में चल रहा था (यूहन्ना 2:20)। वास्तव में 64 ई. के लगभग मन्दिर में सुधार अभी भी चल ही रहे थे।[5] रोमी सेना द्वारा इस मन्दिर को 70 ई. में नष्ट कर दिया गया था। जोसेफस ने इस ढांचे की सुन्दरता का वर्णन शानदार शब्दों में किया है:

> अब मन्दिर का सामने वाला बाहरी भाग व्यक्ति का दिमाग या उसकी नज़र को चकरा देने से किसी भी प्रकार कम नहीं था, क्योंकि यह सारे का सारा भारी वज़न वाली सोने की चद्दरों [से] ढका हुआ था, और सूर्य की पहली किरणें पड़ने से ही बड़ी ज़ोर से चमकता था, जिससे इसे देखने के लिए नज़र टिकाने की कोशिश करने वालों को वैसे ही नज़र फेरनी पड़ती थी, जैसे सूर्य की किरणों के आगे से फेरते हैं। परन्तु परदेसियों के लिए दूर से देखने पर यह मन्दिर बर्फ से लदे पहाड़ जैसा लगता था; क्योंकि इसके जिन भागों पर सोने के पत्तरे नहीं थे, वे बेहद सफेद थे।[6]

टालमुड में मन्दिर को ''संसार की आंख'' कहा गया है। इसमें यह भी कहा गया है, जिसने हेरोदेस के मन्दिर को नहीं देखा, उसने सुन्दर इमारत देखी ही नहीं।[7]

मन्दिर की रचना जिसके कारण चेले चकित हुए थे सम्भवतया मन्दिर के पहाड़ के बाहरी ओर चारों ओर के खम्भे थे। हेरोदेस ने इन्हें तब बनवाया था, जब उसने उस मंच के आकार को दोगुणा कर दिया था।[8] जिस पर मन्दिर बना था। जोसेफस ने लिखा है, ''उसने पूरे मन्दिर के चारों ओर बड़े-बड़े मठ बनवा दिए ... और यह लगने तक कि किसी और ने मन्दिर को इतना अधिक नहीं सजाया था, जितना उसने सजाया, अपने से पहले किसी के द्वारा भी खर्च किए जाने वाले धन से अधिक लगा दिया।''[9] फिलो ने भी हमें एक विवरण दिया है:

> इस मन्दिर की बाहरी परिक्रमा, लम्बाई और चौड़ाई दोनों में बहुत ही विस्तृत होने के कारण बहुत ही महंगी घेराबंदी से दृढ़ की गई। और इनमें से प्रत्येक बेहतरीन लकड़ी और पत्थर से बनी और सजी और हर प्रकार से बहुतायत से इस्तेमाल की गई सामग्री और कारीगरों के अत्यधिक हुनर से और निरीक्षकों की बड़ी ही सावधानी से देखभाल से यह दोगुणा ओसारा है। परन्तु भीतरी परिक्रमाएं कम विस्तृत और भवन की शैली और सजावट अधिक सादा थी, और मन्दिर बीच हर सम्भव विवरण से बाहर सुन्दर था।[10]

खम्भों की दक्षिणी कतार, जिसे राजसी ओसारा कहा जाता था, सबसे प्रभावशाली थी। बड़े विस्तार से वर्णन करने के बाद जोसेफस ने कहा कि ''ऐसी जिसे देखा नहीं गया था, [यह] अतुलनीय थी, और ऐसी जिसे देखा गया था, [यह] बड़ी अद्‌भुत थी।''[11] इसलिए यह तथ्य कि चेलों ने यीशु का ध्यान मन्दिर की इमारतों की विशाल कारीगरी की ओर दिलाया, चकित करने वाली नहीं होनी चाहिए, चाहे उन्होंने इसे पहले कई बार देखा था।

आयत 2. इन इमारतों की उनकी तारीफ़ के जवाब में यीशु ने कहा, **''तुम यह सब देख रहे हो न! मैं तुम से सच कहता हूं, यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।''** प्रभु कह रहा था कि उसके चेलों को ध्यान करना चाहिए कि कोई आफ़त आने वाली थी; उसकी भाषा ने मन्दिर के प्रांगण के पूरे विनाश की ओर ध्यान दिलाया। ''यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा'' वाक्यांश ''बनाने की प्रक्रिया को उलट देता'' है।[12]

उन पत्थरों के विशाल आकार पर विचार करने पर, जिन्हें हेरोदेस के मज़दूरों ने इसके निर्माण में लगाया था, बेशक चेलों के लिए यीशु की भविष्यवाणी अविश्वसनीय थी। बाहरी दीवारों पर लगे इनमें से कुछ पत्थर कई सौ टन से अधिक थे। चूने के पत्थर के ये बड़े-बड़े स्तम्भ

जहां थे, वहां से लाने के लिए कई ढंग इस्तेमाल किए गए थे: (1) उन्हें तिपाई की सहायता से उठाकर, (2) वैगन की तरह उनके साथ पहिये लगाकर, (3) उनके घेरे के गिर्द पहिये लगाकर, और (4) उनके नीचे लट्ठे रखकर हर पत्थर के भार को खींचने के लिए आगे-पीछे कई-कई बैलों को जोड़ा गया था। पत्थर का रास्ता बनाने के लैवल तक मिट्टी की ढलान बनाई जाती थी और फिर कार्य के पूरा हो जाने पर उसे हटाया जाना था।

जोसेफस ने लिखा है कि 70 ई. में रोमी सिपाहियों ने उत्तरी द्वार से बाहरी पत्थरों को निकालते हुए गुरजों से मन्दिर के पहाड़ पर आक्रमण कर दिया। थोड़ी सफलता मिलने पर उन्होंने सीढ़ियों के साथ खम्भों की कतार को नापा। जब उन्होंने देखा कि यहूदी लोगों द्वारा सेना को पीछे हटा दिया गया है तो अन्त में टाइटस ने मन्दिर के प्रांगण में घुसने के लिए फाटकों को आग लगा देने का आदेश दिया। इससे सेना की टुकड़ियों को मन्दिर के मंच तक जाने में सफलता मिल गई। परन्तु बहुत विचार-विमर्श के बाद टाइटस ने आदेश दिया कि मन्दिर के बचाव के लिए आग बुझा दी जाए। तौभी लड़ाई के बीच में आग फैलती रही और कुछ सिपाहियों ने जान-बूझकर भीतरी आंगनों और मन्दिर को जला दिया।[13] स्पष्टतया आग में बच गए पत्थर विजयी सेना ने गिरा दिए।

यीशु की भविष्यवाणी की शब्दावली में यह आवश्यक नहीं है कि हर पत्थर को उसके नीचे के पत्थर से हटा दिया जाए; आग से मन्दिर का विनाश इस भाषा के अनुसार है (देखें 22:7)। मन्दिर के पहाड़ का ऊपरी भाग चाहे नष्ट हो गया था पर हेरोदेस के कर्मचारियों द्वारा इस्तेमाल किए गए बड़े-बड़े पत्थर अभी भी पश्चिमी दीवार में देखे जा सकते हैं, जिसे ''विलाप की दीवार'' भी कहा जाता है। बची हुई दीवार का यह भाग मन्दिर के पहाड़ को बढ़ाने के लिए बनाया गया था।

यीशु ने बताया कि मन्दिर का यह विनाश पाप के लिए दण्ड था। इसलिए हेरोदेस के मन्दिर के विनाश और 586 ई. पू. में सुलैमान के मन्दिर के पतन के बीच निकट समानता पाई जाती है। डग्लस आर. ए. हेयर ने मन्दिर के पूर्ण विनाश के लिए यीशु की भविष्यवाणी के कारण उसे ''बाद का यिर्मयाह'' से मिलाया।[14] मसीह ने मन्दिर के गिरने की बात वैसे ही की जैसे नबियों ने की थी (यिर्मयाह 7:14; 26:6, 18; मीका 3:12)। महत्वपूर्ण बात है कि कई यहूदी भी 70 ई. में मन्दिर के विनाश को परमेश्वर के न्याय के रूप में देखते थे।[15] यीशु ने चाहे मन्दिर के गिरने की भविष्यवाणी की, परन्तु आरम्भिक कलीसिया इसका इस्तेमाल मिलने के लिए इकट्ठा होने वाले स्थान के रूप में करने से हिचकिचाती नहीं थी (प्रेरितों 2:46; 3:1, 11)। यहूदी मसीही वहां जाते रहे (प्रेरितों 21:26, 27), शायद मन्दिर के नष्ट होने के निकट तक।

चेलों के प्रश्न (24:3)

[3]और जब वह जैतून के पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने एकांत में उसके पास जाकर कहा, ''हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?''

आयत 3. दृश्य मन्दिर से बदलकर यरूशलेम के पूर्व की ओर किद्रोन नामक तराई से थोड़ा आगे **जैतून के पहाड़** पर चला जाता है (21:1 पर टिप्पणियां देखें)। गैर यहूदी पाठकों को

लिखते हुए मरकुस ने समझाया कि ''जैतून का पहाड़ मन्दिर के सामने'' था (मरकुस 13:3)। इस स्थान से यीशु और उसके चेलों को मन्दिर के पहाड़ और पूरे नगर का शानदार दृश्य मिलता था। अपोकलिप्टिक साहित्य से अपने सम्बन्ध के कारण इस जगह का दृश्य (जकर्याह 14:4), यरूशलेम के पतन और सब बातों के अन्त पर बात करने का उपयुक्त स्थान बन गया।

चेलों के उसके पास आने के समय यीशु **बैठा था** (5:1; 13:2; 23:2; 26:55)। मरकुस ने स्पष्ट किया कि उसके पास आने वाले पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना थे (मरकुस 13:3)। ये चारों जन आरम्भिक चेले थे, जिन्हें यीशु ने बुलाया था (4:18–22)। इसमें से कम से कम तीन जन चेलों के उसके भीतरी दायरे में से थे (17:1 पर टिप्पणियां देखें)। इन्होंने उससे **एकांत में** मन्दिर के विनाश की उसकी भविष्यवाणी के विषय में पूछा, उन्होंने कहा, **''हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?''** यूनानी धर्मशास्त्र से संकेत मिलता है कि दो प्रश्न पूछे जा रहे थे। चेलों ने पहले पूछा था, ''हमें बता कि ये बातें कब होंगी?'' यह प्रश्न मन्दिर के विनाश के सम्बन्ध में था। ''ये बातें'' इस अध्याय में इस्तेमाल होने वाला मुख्य वाक्यांश हैं और आमतौर पर इन्हें यरूशलेम के पतन से जोड़ा जाता है। इसके अलावा चेलों ने पूछा, ''तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?'' मसीह के ''आने'' और जगत के ''अन्त'' को व्याकरणीय रूप में जोड़ा गया है।[16] इसलिए केवल ''एक चिह्न'' की बात आवश्यक थी। स्पष्टतया चेलों ने इन घटनाओं को एक ही समय में होने वाली घटना मान लिया।

''आने'' के लिए यूनानी शब्द (*parousia*) महत्वपूर्ण शब्द है। इसका इस्तेमाल किसी की ''उपस्थिति में पहले चरण के रूप में आगमन'' के लिए होता था।[17] परन्तु इस शब्द के और तकनीकी अर्थ थे। यूनानी साहित्य में *पेरोसिया* का इस्तेमाल गुप्त व्यक्तित्व के आगमन का संकेत देने के लिए किया जाता था, जो लोगों पर अपनी उपस्थिति, अपनी शक्ति प्रकट करके दिखाता था। इसके अलावा इसका इस्तेमाल इलाके में किसी राजा या सम्राट जैसे उच्च पदाधिकारी के आने के लिए हो सकता था।[18] ये दोनों परिभाषाएं मसीह के द्वितीय आगमन पर विचार करने पर मिल जाती हैं। वह राजाओं के राजा और प्रभुओं का प्रभु होने के साथ-साथ परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र भी है। वर्तमान समय में चाहे वह गुप्त है पर न्याय के समय वह सारी मनुष्यजाति पर अपने आपको प्रकट करेगा और अपनी सामर्थ दिखाएगा। उसका आना अपने विश्वासयोग्य अनुयायियों के साथ उसकी उपस्थिति का पहला आरम्भिक चरण होगा। *पेरोसिया* शब्द का इस्तेमाल इस अध्याय में कई बार हुआ है (24:3, 27, 37, 39)। यीशु के आगमन के सम्बन्ध में नये नियम के और लेखों में भी यह मिलता है (1 कुरिन्थियों 15:23; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; 5:23; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1, 8; याकूब 5:7, 8; 2 पतरस 1:16; 3:4; 1 यूहन्ना 2:28)।

''जगत के अन्त'' वाक्यांश मत्ती की पुस्तक में पांच बार आता है (13:39, 40, 49; 24:3; 28:20; देंखें इब्रानियों 9:26)। इन पांचों बार में स्पष्ट रूप में इसका अर्थ संसार का अन्त है न कि यहूदी प्रबन्ध या मूसा के प्रबन्ध का अन्त।

टिप्पणियां

[1]देखें फिलो *स्पेशल लॉस* 1.14. [2]2 मक्काबियों 2:22. [3]जोसेफस *वार्स* 1.21.1. [4]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 15.11.6. [5]वही, 20.9.7. [6]जोसेफस *वार्स* 5.5.6. [7]टालमुड *बाबा बथरा* 4ए। [8]जैक पी. लुईस ने लिखा कि ''इस प्रकार मन्दिर का क्षेत्र अथेने के अक्रोपुलिस से दोगुना था।'' (जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री [आस्टिन, टैक्ससः स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976], 120.)। [9]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 15.11.3; देखें 15.11.5. [10]फिलो *स्पेशल लॉस* 1.13. ''भीतरी परिक्रमाओं'' का फिलो का हवाला स्पष्टतया उन कई कमरों के लिए है, जो भीतरी आंगनों के साथ साथ था, जो याजकों, इस्राएली पुरुषों और इस्राएली स्त्रियों के लिए बनाए गए थे।

[11]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 15.11.5. [12]रोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28*, वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलासः वर्ड बुक्स, 1995), 688; देखें हाग्गै 2:15. [13]जोसेफस *वार्स* 6.4.1–8. [14]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू*, इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्लेः जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 273. [15]जोसेफस *वार्स* 6.5.3, 4; टालमुड *शब्बथ* 119बी; योमा 9बी। [16]यूनानी भाषा में ''आने'' और ''अन्त'' दोनों एक ही उपपद से बनते हैं। [17]वाल्टर ब्राउर, *ए ग्रीक–इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 780. [18]वही, 780–81.